● **पढ़ो और समझो :**

७. जहाँ चाह, वहाँ राह

– अनुराधा मोहिनी

जन्म : २१ सितंबर १९६१, नागपुर (महाराष्ट्र) **परिचय :** अनुवाद के क्षेत्र में अनुराधा मोहिनी जी ने अमूल्य योगदान दिया है तथा आपने विविध पारिभाषिक कोशों की निर्मिति में सहभाग, वैचारिक एवं ललित पुस्तकों का संपादन किया है ।

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने संकल्पशक्ति और उसके समुचित क्रियान्वयन से असंभव काम को संभव करने की प्रेरणा दी है ।

बताओ तो सही

स्वयं किए हुए कार्य → घर, परिवेश, विद्‌यालय, त्योहार

येसंबा गाँव की पाठशाला की घंटी बजी । धुआँधार बरसात हो रही थी । वर्षा के कारण प्रार्थना मैदान पर न होकर कक्षा में संपन्न हुई । उपस्थिति लेते हुए गुरु जी ने देखा कि आज कक्षा में बहुत कम विद्‌यार्थी हैं । ''आज इतने विद्‌यार्थियों के अनुपस्थित रहने का कारण क्या है ?'' उन्होंने विद्‌यार्थियों से पूछा । ''वही नाला, गुरु जी ।'' सबने एक स्वर में उत्तर दिया ।

येसंबा गाँव के ठीक बीच से एक नाला बहता था । गाँव की बस्ती नाले के एक तरफ थी, पाठशाला और खेत दूसरी तरफ थे । बरसात के दिनों में नाले में कई बार चार से पाँच फीट तक पानी भर जाता था । बड़े-बुजुर्ग तो किसी तरह अपने गाय-बैलों के साथ नाला पार कर

खेतों में चले आते किंतु पाठशाला आने के लिए नाला लाँघना विद्‌यार्थियों के लिए संभव नहीं था । जब-जब जोरों की बारिश होती उस दिन कक्षा में विद्‌यार्थियों की उपस्थिति पर असर पड़ता । अनेक बार विद्‌यार्थी पूरे सप्ताह पाठशाला नहीं जा पाते । इसके चलते 'गाँव में बरसात, नाले में भरा पानी-पाठशाला से छुट्‌टी, येसंबा की यही कहानी,' यह गीत गाँव में प्रचलित हो गया था ।

पाठशाला में अनुपस्थिति का विद्‌यार्थियों की पढ़ाई पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता । अच्छी श्रेणी लाने वाले विद्‌यार्थी भी वार्षिक परीक्षा में पीछे रह जाते । सब परेशान थे पर क्या करते ? मार्ग असंभव था ।

असंभव में मूल शब्द 'संभव' होता है । यही संभावना एक दिन एकाएक काम कर गई । हुआ यह कि उस दिन भारी वर्षा के कारण येसंबा के अधिकांश विद्‌यार्थी पाठशाला नहीं जा पाए थे । सो दोपहर बाद बरसात थोड़ी रुकने पर चौपाल में बरगद के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठे वे आपस में बातचीत कर रहे थे । तभी तुषार ने कहा, ''अरे ! इस बरगद के पेड़ में भूत है । यहाँ क्यों बैठे हो ?'' ''भूत-वूत सब कोरी कल्पना और बकवास है । क्या हम में से किसी ने भूत देखा है ? सब केवल मनगढ़ंत बातें हैं'', जुई ने कहकर बातचीत आगे बढ़ाई । ''आज एक और अनुपस्थिति लग गई मेरी । अब तक चौदह अनुपस्थितियाँ हो चुकीं इस बरसात में,''उज्ज्वला ने परेशानी भरे स्वर में

❑ कहानी का आदर्श वाचन करें । कुछ विद्‌यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । उनसे कहानी का मौन वाचन कराके अपने शब्दों में कहानी कहने के लिए कहें । नए शब्द समझाएँ । उनसे इसके किसी एक परिच्छेद का श्रुतलेखन कराके पाठ्‌यपुस्तक से जाँचने के लिए कहें ।

कहा । ''मेरी तो कुल उपस्थिति ही शायद चौदह होगी', शुभम ने कहा तो सब हँस पड़े। ''लेकिन क्या हम हर बरसात में ऐसे ही चर्चा करते रहेंगे और अपनी पढ़ाई का नुकसान होने देंगे ? क्या हम ऐसे ही हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे, आशीष ने गंभीर स्वर में पूछा । ''हम कर भी क्या सकते हैं; हम तो बच्चें हैं ?'' तुषार ने कहा । ''सच कहा तुषार तूने, हम बच्चे कर भी क्या सकते हैं ?'' 'हम बच्चे कर भी क्या सकते हैं !' ...... इस वाक्य को गीत की तरह गाकर, एक साथ तालियाँ बजाकर वहाँ बैठे बच्चे जोर-जोर से हँसने लगे ।

''हँसो मत... ! कोई कुछ कर सकता है तो वह हम ही हैं,'' आत्मविश्वास भरा यह स्वर दामिनी का था । ''हर समस्या का निदान संभव है । प्रकृति ने विचार करने के लिए हमें बुद्धि दी है । मुझे विश्वास है कि हम सब मिलकर विचार करेंगे तो कोई न कोई रास्ता अवश्य मिलेगा । कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं

होती ।'' दामिनी की बातों ने बातचीत का माहौल बदल दिया । हर कोई गंभीर होकर समस्या के हल के बारे में सोचने लगा । ''हल मिल गया । हम बरसात में भी पाठशाला जा सकते हैं,'' आशीष की आँखों में चमक और स्वर में उत्साह था । ''कैसे ?'' सबने एक साथ पूछा । ''हम नाले पर पुल बनाएँगे ।'' '' पुल.... !'' मित्रों के स्वर में आश्चर्य को भाँपकर आशीष ने आत्मविश्वासपूर्वक उत्तर देते हुए कहा, ''हाँ पुल । विज्ञान की पुस्तक में हम सबने पुल की जानकारी पढ़ी है । जब कभी शहर गए हैं, बड़े-बड़े पुल देखे भी हैं । अंतरजाल से हम जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं । गाँव का नाला बहुत ज्यादा चौड़ा नहीं है । हमें लगभग दस फीट का पुल बनाना होगा ।''

पुल बनाने का विचार जंगल की आग की तरह येसंबा गाँव में फैल गया । हर व्यक्ति इस विचार और विद्‌यार्थियों के हौसले की प्रशंसा कर रहा था ।

विद्‌यार्थियों ने छोटे-छोटे समूह बनाकर इस प्रकल्प की बारीकियों पर काम करना शुरू कर दिया । सामग्री की सूची बनाई । सामग्री खरीदने के लिए बीस-बीस रुपये एकत्रित करना आरंभ किया। अब तक पाठशाला के शिक्षक और गाँव के लोग भी सहायता के लिए आगे आ चुके थे । देखते-देखते सामग्री के लिए आवश्यक राशि जमा हो चुकी थी ।

बुजुर्गों का अनुभव, युवाओं की शक्ति, विद्‌यार्थियों का उत्साह सब साथ मिलकर काम कर रहे थे । संगठित प्रयासों से काम आकार लेने लगा था । सीमेंट के पाइप खरीदे गए । पत्थर इकट्‌ठे किए गए । ईंटे आईं । बंजर जमीन से मिट्‌टी खोदी गई । गाँव के छगनबाबा नामक एक बुजुर्ग ने प्रचुर मात्रा में रेत उपलब्ध करा दी । पुल बनाने के लिए पूरे गाँव के हाथ एक साथ मिट्‌टी का भराव करने लगे । हर दिन स्वप्नपूर्ति

- विद्‌यार्थियों को सुनी-पढ़ी साहस कथा को सुनाने के लिए प्रेरित करें । अंधविश्वासों पर चर्चा करें और वैज्ञानिक दृष्टिकोण बताएँ । कहानी में आए विरामचिह्न बताकर उनके नाम लिखने के लिए कहें । पाठ से हिंदी-मराठी समोच्चारित शब्दों की सूची बनवाएँ ।

वाचन जगत से

गणतंत्र दिवस पर सम्मानित बच्चों के बहादुरी के प्रसंग पढ़ो और पसंदीदा किसी एक का वर्णन करो ।

https://india.gov.in

की ओर एक-एक कदम बढ़ाने लगा था गाँव ।

अंततः आनंद की वह सुबह भी आ गई । वर्षों की कठिनाई दूर हुई । केवल पंद्रह दिनों में ग्रामीणों और विद्‌यार्थियों के सामूहिक श्रमदान से पुल बनकर तैयार हो चुका था । पूरे गाँव के लिए यह अद्‌भुत उपलब्धि थी । सभी ने एकता, संगठन और श्रमदान का महत्त्व भी समझा था ।

बरसात में इस बार भी नाले में पानी भरा था पर विद्‌यार्थी हँसते-खेलते पुल से पाठशाला की राह जाने लगे । पुल भी विद्‌यार्थियों के हौसले को दाद देता, मानो मन-ही-मन कह रहा था, 'जहाँ चाह, वहाँ राह ।' जुई ने अपने बड़े भाई की सहायता से पुल के उद्‌घाटन का वृत्तांत बनाया और संगणक की सहायता से शिक्षा निरीक्षक के सामने प्रस्तुत किया ।

अनुवाद : संजय भारद्‌वाज

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

लाँघना = पार करना

असर = परिणाम

बकवास = व्यर्थ की बातें

निदान = समाधान

माहौल = वातावरण

हल = निराकरण

भाँपना = अंदाज लगाना

हौसला = हिम्मत

राशि = धन

प्रचुर = अधिक

कहावत

जहाँ चाह, वहाँ राह = इच्छा होने पर मार्ग मिलता है

खोजबीन

भारतीय सेना संबंधी जानकारी ढूँढ़ो और लिखो :

विभाग | पद | वेशभूषा | कार्य

अध्ययन कौशल

संदर्भ स्रोतों द्‌वारा निम्न रोगों से बचने के लिए दिए जाने वाले टीकों की जानकारी सुनो और संकलित करो :

रोग	टीका	रोग	टीका
तपेदिक(टीबी)	बी.सी.जी	टायफॉइड (मोतीझरा)	
डिप्थीरिया		रुबेला	
खसरा		हैपेटाइटिस ए	
रोटावायरस		टिटनस	

सामान्य विज्ञान ५ वीं कक्षा पाठ २३

सदैव ध्यान में रखो

दृढ़ संकल्पों से ही सपने साकार होते हैं ।

१. किसने किससे कहा है ?

(क) ''आज इतने विद्‌यार्थियों के अनुपस्थित रहने का कारण क्या है ?''

(ख) '' जब कभी शहर गए हैं, बड़े-बड़े पुल देखे भी हैं ।''

२. कहानी के शीर्षक की सार्थकता बताओ ।

३. आँखों देखी किसी घटना का वर्णन करो ।

४. इस कहानी का सारांश लिखो ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो और मोटे अक्षरों में छपे शब्दों पर ध्यान दो, पढ़कर उद्‌देश्य-विधेय अलग करके लिखो :

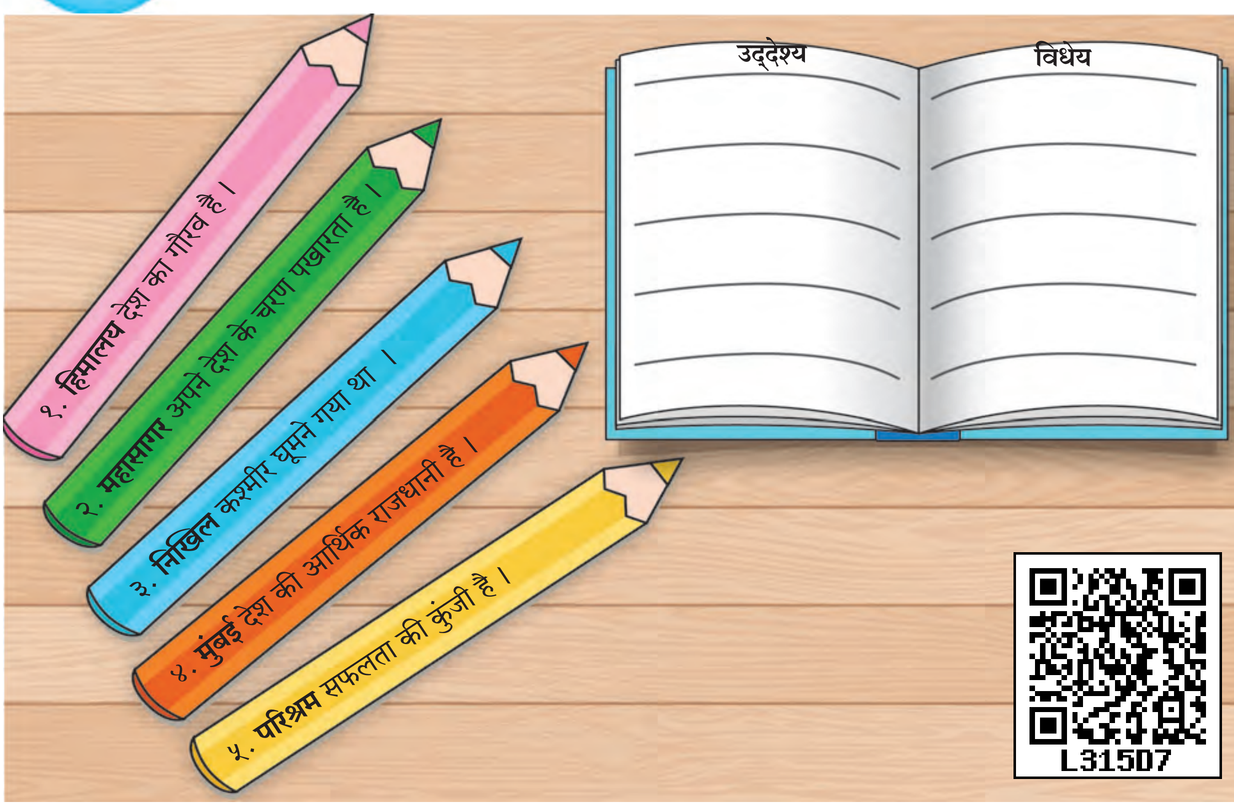

ऊपर के वाक्यों में **हिमालय, महासागर, निखिल, मुंबई, परिश्रम** बारे में कहा गया हैं । वाक्य में जिसके बारे में कहा या बताया जाता है वह **उद्‌देश्य** होता है ।

ऊपर के वाक्यों में हिमालय के बारे में- **देश का गौरव है,** महासागर के बारे में- **अपने देश के चरण पखारता है,** निखिल के बारे में- **कश्मीर घूमने गया था,** मुंबई के बारे में-**देश की आर्थिक राजधानी है,** परिश्रम के बारे में-**सफलता की कुंजी है-** कहा गया है । उद्‌देश्य के बारे में जो कहा जाता है वह **विधेय** होता है ।